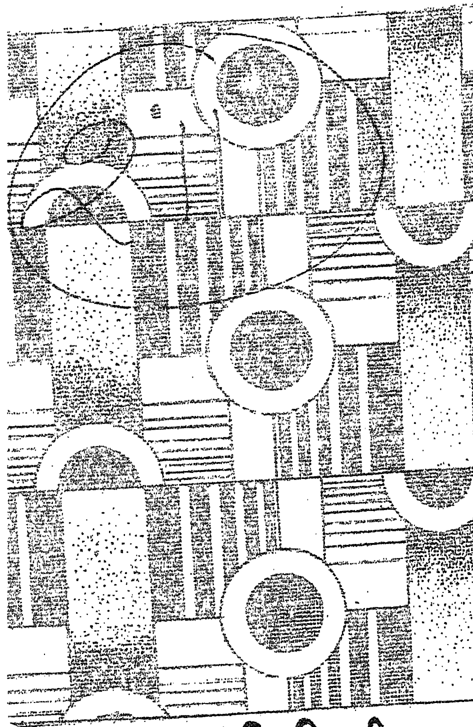
काव्य मकरन्द



करुणापति त्रिपाठी